# 4 गुरु समान दाता नहिं कोई...

गुरु समान दाता नहिं कोई
भानु–प्रकाश न नाशत जाको, सो अँधियारा डारै खोई ।।
गुरु. ।।

मेघ समान सबनपै बरसै, कछु इच्छा जाके नहिं होई।
नरक पशुगति आग मांहितैं, सुरग मुक्ति सुख थापै सोई ।।
गुरु. ।।1 ।।

तीन लोक मन्दिरमें जानौ, दीपक सम परकाशक–लोई ।
दीपतलै अँधियार भर्यो है, अन्तर बाहिर विमल है जोई ।।
गुरु. ।।2 ।।

तारन तरन जिहाज सुगुरु हैं, सब कुटुम्ब डोबै जगतोई ।
'द्यानत' निशिदिन निरमल मनमें, राखो गुरु–पद–पंकज दोई ।।
गुरु ।।3 ।।

हे आत्मन! गुरु के समान दाता अर्थात् देने वाला अन्य कोई नहीं है। अपने भीतर की मलिनता रूप अंधकार को जिसे सूर्य का प्रकाश भी नष्ट नहीं कर सकता उसे सच्चे गुरु सम्यग्ज्ञान के प्रकाश से नष्ट कर देते हैं॥टेक॥

जैसे बादल समान रूप से चारों ओर बारिश करता है और बरसने की उसकी कोई इच्छा नहीं होती वह स्वतः ही बरसता है वैसे ही सच्चे गुरु भव्य जीवों को नरक व पशुगति की आग से बाहर निकाल कर उन्हें स्वर्ग और मुक्ति के सुख में मात्र ज्ञानमात्र के द्वारा स्थापित करते हैं॥1॥

वे गुरु तीन लोक में दीपक के समान हैं अर्थात् श्रद्धा व विश्वास के केंद्र हैं। जिस प्रकार दीपक स्वयं जलकर अपने चारों ओर प्रकाश करता है किंतु उस लौकिक दीपक के तले तो अंधकार ही होता है; वहीं जब सच्चे गुरु तप करते हैं तब वे अंतर तथा बाह्य सब ओर से स्व-पर प्रकाशक होते हैं॥2॥

गुरु सम्यग्ज्ञान द्वारा संसार-सागर से पार उतारने के लिए जहाज के समान हैं जबकि सारा कुटुंब-परिवार तो संसार में डुबोने वाला है। कविवर द्यानतराय जी कहते हैं कि अपने मन को निर्मल कर उसमें ऐसे सच्चे गुरु के चरण कमल को सदा आसीन रखो अर्थात् उन्हें श्रद्धापूर्वक सदैव नमन करो॥3॥